Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

पौराणिक मलय पर्वत

डॉ. आरती यादव
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, संस्कृत – विभाग,
चौ. चरण सिंह पी. जी. कॉलेज हेंवरा सैफ़ई, इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info

Volume 4, Issue 3

Page Number : 25-32

Publication Issue :

May-June-2021

Article History

Accepted : 01 June 2021

Published : 15 June 2021

सारांश– मलय पर्वत सात कुल पर्वतों में से एक पर्वत है। जो भारतवर्ष में विद्यमान हैं। परन्तु किसी भी पुराण में इस पर्वत की अवस्थिति का वर्णन नहीं प्राप्त होता है। पुराणों में इस पर्वत का नामोल्लेख कुल पर्वतों में किया गया है और इससे नि:सृत नदियों को बताया गया है। इससे यह स्पष्ट नहीं होता है कि इस पर्वत की अवस्थिति कहां है। परन्तु वर्तमान में सभी विद्वान् इस पर एक मत है कि इस पर्वत की अवस्थिति दक्षिण भारत में है।

मुख्यशब्द– मलय पर्वत, पौराणिक, दक्षिण भारत, नदी, संस्कृत,द्वीप।

पुराणों में भूगोल एक महत्वपूर्ण विषय है। प्राय: सभी पुराणों में चतुर्द्वीपा वसुमती, सप्तद्वीपा वसुमती, ११ भुवन, क्षीरसागर आदि भू- विभाजन, तीर्थों, समुद्रों, नदियों, पर्वतों एवं भौगोलिक महत्त्व के स्थानों का वर्णन प्राप्त होता है। पुराणों में वर्णित भूगोल मुख्यत: दो रूपों में है –

- समस्त संसार का भूगोल
- भारतवर्ष का भूगोल

साधारणतया ऐसा माना जाता है कि पौराणिक भू- विवरण काल्पनिक है, परन्तु इसको पूर्णत: काल्पनिक मानना तर्कसंगत नहीं है। इसमें कुछ यथार्थता अवश्य है। त्रुटि इतनी ही है कि उन स्थानों की पहचान वर्तमान में नि:संदिग्ध रूप से ज्ञात नहीं हो सकी है। इसकी गवेषणा अपेक्षित है। पुराणों में सप्तद्वीपा वसुमती की कल्पना एक विशिष्ट विशेषता है। इसमें वर्णित कुछ द्वीपों की तो पहचान भी की जा चुकी है। जैसे- कुशद्वीप, शकद्वीप और जम्बूद्वीप। इसी प्रकार सात समुद्रों की कल्पना भी आश्चर्यजनक है। इस प्रकार पौराणिक भूगोल यथार्थ है, आवश्यकता केवल इसकी वैज्ञानिक खोज की है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

पुराणों में भुवनकोश का वर्णन एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इसमें समस्त भुवनों का भौगोलिक नाम, विस्तार तथा स्वरूप का विशद वर्णन प्राप्त होता है। इस भू- वृत्त के केन्द्र में मेरू पर्वत की स्थिति मानी गयी है और इसी को केन्द्र मानकर भुवन कोश का विन्यास किया गया है। विष्णु पुराण में सम्पूर्ण पृथ्वी को कमल के रूप में स्वीकार किया गया है और उसकी कर्णिका में मेरू पर्वत की स्थिति मानी गयी है –

भूपद्मस्यास्य शैलोऽसौ कर्णिकाकारसंस्थितः। - वि. पु. -२/२/१०

एक अन्य स्थान पर वायु पुराण में कहा गया है कि उस महात्मा प्रजापति का हिरण्यमय मेरुपर्वत गर्भ है, समुद्र गर्भ से निःस्यन्दमान उदक है और शिरायें तथा हड्डियां पर्वत हैं –

हिरण्यमयस्तु यो मेरुस्तस्योल्बं तन्महात्मनः।
गर्भोदकं समुद्राश्च सिराद्यस्थीनि पर्वताः॥ - वा. पु. ५/८०

पुराणों में वर्णित भुवनकोशों में द्विविध वसुमती का वर्णन किया गया है –

- चतुर्द्वीपा वसुमती
- सप्तद्वीपा वसुमती

विद्वानों का मानना है कि चतुर्द्वीपा वसुमती की कल्पना प्राचीन है। जबकि सप्तद्वीपा वसुमती की कल्पना उसके बाद आयी। वायुपुराण में चतुर्द्वीपा वसुमती का वर्णन किया गया है -

पद्माकारा समुत्पन्ना पृथिवी सघनद्रुमा।
तदस्य लोक-पद्मस्य विस्तरेण प्रकाशितम्॥
महाद्वीपास्तु विख्याताश्चत्वारः पत्रसंस्थिताः।
ततः कर्णिकसंस्थानो मेरुर्नाम महाबलः॥ - वा. पु. ३४/४५-४६

ये चार द्वीप इस प्रकार हैं –

- भद्राश्व द्वीप
- जम्बूद्वीप
- केतुमालद्वीप
- उत्तरकुरु द्वीप

प्रत्येक द्वीप में एक विशिष्ट पर्वत, एक नदी, एक वृक्षकुंज, एक झील, तथा आराधना के निमित्त एक विशिष्ट रूपधारी भगवान् की स्थिति मानी गयी है।

पुराणों में वर्णित सात द्वीप इस प्रकार हैं –

- जम्बूद्वीप
- प्लक्षद्वीप
- शाल्मलि द्वीप

- कुशद्वीप
- क्रौञ्चद्वीप
- शकद्वीप या शाकद्वीप
- पुष्करद्वीप

जम्बूप्लक्षाह्यौ द्वीपौ शाल्मलश्चापरो द्विज:।
कुश: क्रौञ्चस्तथा शाक: पुष्करश्चैव सप्तम:॥ - वि.पु. २/२/५

जम्बूद्वीप इस कल्पना के द्वारा मध्य में है और इन द्वीपों से वेष्टित है और ये द्वीप आपस में एक- एक समुद्र के द्वारा पृथक्कृत किये गये हैं। इन सातों द्वीपों में सात पर्वत तथा सात नदियां है। जम्बूद्वीप में नौ वर्ष हैं जिसमें एक भारत वर्ष है। इसी भारतवर्ष में मलय पर्वत स्थित है। इसे एक रेखाचित्र के माध्यम से समझा जा सकता है-

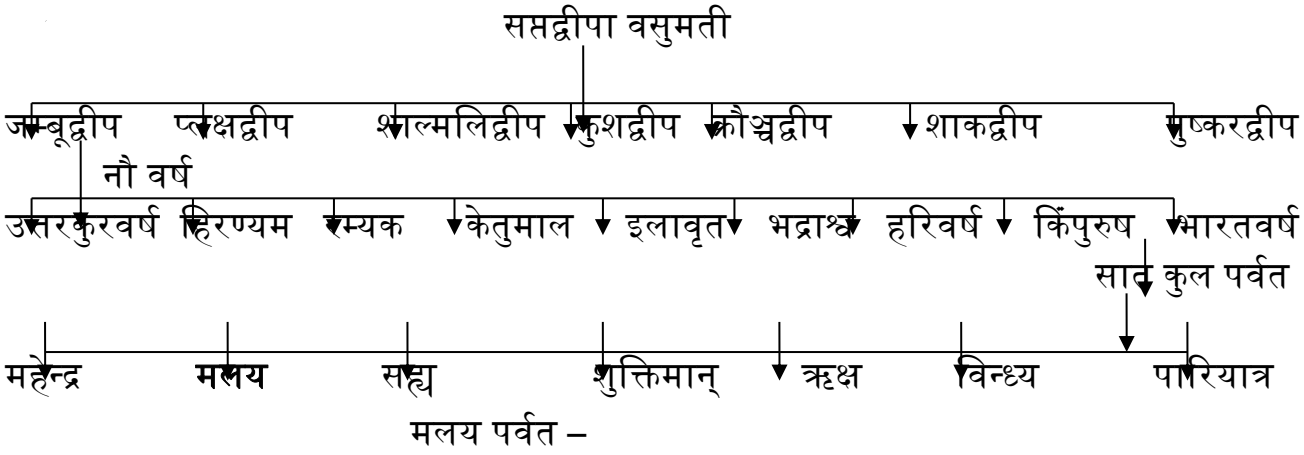

मलय पर्वत –

पौराणिक भूगोल के प्रसंग में मुख्यतया पांच प्रकार के पर्वतों का वर्णन किया गया है –

- मर्यादा पर्वत
- वर्ष पर्वत
- कुल पर्वत
- विष्टम्भक पर्वत
- केशराचल पर्वत

पुराणों में मर्यादा पर्वत की परिभाषा नहीं बतायी गयी है। विष्णुपुराण में मर्यादा पर्वत सात बताये गये हैं, जो इस प्रकार हैं - जठर, देवकूट, गन्धमान, कैलास, निषध, पारियात्र, श्रृंगवज्जारुध। इसमें से जठर और देवकूट नामक मर्यादा पर्वत मेरु पर्वत के पूर्व में, गन्धमान और कैलास मेरु के दक्षिण में, निषध और पारियात्र पश्चिम में और श्रृंगवज्जारुध उत्तर में स्थित है।

वर्ष पर्वत वे हैं जो एक वर्ष को दूसरे वर्ष से पृथक करते हैं। विष्णु पुराण के अनुसार वर्ष पर्वत छ: हैं उनमें से हिमवान्, हेमकूट और निषध ये तीन मेरु के दक्षिण में तथा नील, श्वेत और श्रृंगी ये तीन मेरु के उत्तर में स्थित हैं -

हिमवान् हेमकूटश्च निषधश्चास्य दक्षिणे।
नील: श्वेतश्च श्रृंगी च उत्तरे वर्ष पर्वता:॥ -विष्णु पु. २/२/११

इसी प्रकार लिंग पुराण में भी मेरु पर्वत के उत्तर दक्षिण में क्रमश: स्थित छ: पर्वतों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। परन्तु वहां हिमवान के स्थान पर हिरण्यवान कहा गया है-

नीलस्तस्योत्तरे मेरो: श्वेतस्तस्योत्तरे पुन:।
श्रृंगी तस्योत्तरे विप्रास्त्रयस्ते वर्षपर्वता:॥
निषधो दक्षिणे मेरो स्तस्य दक्षिणतो गिरि:।
हेमकूट इति ख्यातो हिरण्वांस्तस्य दक्षिणे॥ - लिंड़ पु. ४९/३४

पुराणों में कहीं भी कुल पर्वत शब्द का अर्थ प्रतिपादित नहीं किया गया है। परन्तु आप्टे महोदय के द्वारा कुल शब्द को देश, राष्ट, जाति का पर्यायवाची बताया है। उनके अनुसार कुल शब्द का अभिप्राय राष्ट्र विभाजक पर्वत है। इस प्रकार कुल पर्वत वे हैं जो एक प्रान्त को दूसरे प्रान्त से पृथक करते हैं। ये पर्वत सात हैं –

- महेन्द्र पर्वत
- **मलय पर्वत**
- सह्य पर्वत
- शुक्तिमान पर्वत
- ऋक्ष पर्वत
- विन्ध्य पर्वत
- पारियात्र पर्वत

महेन्द्रो मलय: सह्य: शुक्तिमानृक्ष पर्वत:।
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तात्र कुलपर्वता:॥[1]

प्रत्येक कुल पर्वत विशेष देश से सम्बन्धित है। जैसे – महेन्द्र पर्वत कलिंग देश के आश्रित है, मलय पर्वत पाण्ड्य देश के सह्यपर्वत अपरान्त देश के शुक्तिमान् भल्लाट के ऋक्ष माहिष्मती के विन्ध्य आटव्य देश के और पारियात्र निषध देश के आश्रित है। वर्तमान काल में महेन्द्र पर्वत श्रृंखला पूर्वी घाट – गोदावरी – महानदी के मध्य में है। मलय पर्वत की स्थिति दक्षिण भारत में, सह्य पर्वत का उल्लेख सातवाहन नरेश शातकर्णी के नासिक प्रशस्ति में है।

[1] वा. पु. ४५/८२, मत्स्य पु. १०३/७, वि. पु. २/३/३, गरुड़ पु. ५५/६

मेरु पर्वत के चारों ओर विष्टम्भक पर्वत स्थित हैं। ये मेरु पर्वत को चारों ओर से घेर कर स्थित हैं। इनमें पूर्व दिशा में मन्दर पर्वत, दक्षिण में गन्धमान, पश्चिम में विपुल और उत्तर में सुपार्श्व पर्वत स्थित है। इन चारों पर्वतों पर क्रमश: कदम्ब, जम्बू, पीपल और वट के वृक्ष ध्वजा के रूप में विद्यमान हैं-

पूर्वेण मन्दरो नाम दक्षिणे गन्धमादन:।
विपुल: पश्चिमे पार्श्वे सुपार्श्वश्चोत्तरे स्मृत:॥
कदम्बस्तेषु जम्बूश्च पिप्पलो वट एव च।
एकादशशतायामा: पादपा गिरिकेतव:॥ -विष्णु पु. २/२/१८-१९

मेरु पर्वत के चारों ओर कर्णिका के आकार में केशराचल पर्वत स्थित है। इन पर्वतों में कुमुद, शीताम्भा आदि पूर्व में, त्रिकुट, शिशिर आदि दक्षिण में, कपिल, वैदूर आदि पश्चिम में और शंखकूट कालञ्जर आदि उत्तर में स्थित है।

विभिन्न पुराणों में मलय पर्वत का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया गया है –

वामन पुराण में वर्णित मलय पर्वत

वामन पुराण में बताया गया है कि भारतवर्ष में सात कुल पर्वत हैं। जो इस प्रकार है –

- महेन्द्र पर्वत
- **मलय पर्वत**
- सह्य पर्वत
- शुक्तिमान् पर्वत
- ऋक्ष पर्वत
- विन्ध्य पर्वत
- पारियात्र पर्वत

महेन्द्रो मलय: सह्य: शुक्तिमानृक्ष पर्वत:।
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तात्र कुलपर्वता:॥ -वामन पु. १३/१४

इस प्रकार मलय पर्वत सात कुल पर्वतों में से एक है। वामन पुराण में कहा गया है कि यह पर्वत हिमालय की सभा में गया था –

पर्वत: अयं हिमाद्रिभवनजगाम। २६/४८

इस पुराण में इस पर्वत की विशेषता का उल्लेख करते हुए इसके सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार किया गया है- यह सिद्धों द्वारा सेवित कन्दराओं वाले, लता वितान से आच्छन्न, मत्त प्राणियों से परिपूर्ण, सुशीतल सर्पों से आक्रान्त, चन्दन से युक्त, माधवी कुसुम से परिपूर्ण तथा ऋषियों से अर्चित था। परन्तु इस पुराण में कहीं भी मलय पर्वत की अवस्थिति का उल्लेख नहीं किया गया है।

वायु पुराण में वर्णित मलय पर्वत

वायु पुराण के ४५वें अध्याय में कहा गया है कि समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में जो देश स्थित है उसका नाम भारत वर्ष है। यहां सात कुल पर्वत है- महेन्द्र, **मलय,** सह्य, शुक्तिमान,ऋक्षि, विन्ध्य और पारियात्र -

सप्त चास्मिन्सुपर्वाणो विश्रुत: कुलपर्वता:।
महेन्द्रो मलय: सह्य: शुक्तिमानृक्षपर्वत:॥
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वता:। - वायु. पु. ४५/८७-८८

इस पर्वत से कई नदियां निकलती हैं जो इस प्रकार हैं – कृतमाला, ताम्रपर्णी, पुण्यजाति और उत्पलावती। इन नदियों का जल निर्मल और स्वच्छ है-

कृतमाला ताम्रपर्णी पुण्यजात्युत्पलावती।
मलयाभिजातास्ता नद्य: सर्वा: शीतलजा: शुभा:॥ -वायु पु.४५/१०५

वायु पुराण में ही ४८ वें अध्याय में कहा गया है कि जम्बू द्वीप में तरह - तरह के वस्तुओं को पैदा करने वाले छ: और द्वीप हैं। इन्हीं द्वीपों में एक मलय द्वीप भी है। इस द्वीप में मणि, सोने और रत्न की खानें हैं और यहां पर चन्दन के वृक्ष होते हैं। इस द्वीप में म्लेच्छ जाति के लोग निवास करते हैं। यहीं पर मलय नाम का एक विशाल पर्वत है। इस पर्वत पर चांदी की खानें हैं। यहां पर महा मलय नाम का भी एक पर्वत है।

तथैव मलयद्वीपमेवमेव सुसंवृतम्।
मणिरत्नाकरं स्फीतमाकरं कनकस्य च॥
आकरं चन्दनानां च समुद्राणां तथाऽऽकरम्।
नानाम्लेच्छगणाकीर्ण नदीपर्वतमण्डितम्॥
तत्र श्रीमांस्तु मलय: पर्वतो रजताकर:।
महामलय इत्येवं विख्यातो वरपर्वत:॥ - वायु पु. ४८/२०-२२

विष्णु पुराण में वर्णित मलय पर्वत

विष्णु पुराण के द्वितीय अंश के तीसरे अध्याय में कहा गया है कि जो समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में स्थित है वह भारतवर्ष कहलाता है। उसमें भरत की सन्तान बसी हुई है। इसका विस्तार नौ हजार योजन है। यह स्वर्ग और अपवर्ग प्राप्त करने वालों की कर्मभूमि है। इसमें महेन्द्र, मलय,सह्य, शुक्तिमान, ऋक्ष,विन्ध्य और पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्तति:॥
नवयोजन साहस्रो विस्तारोऽस्य महामुने।
कर्मभूमिरियं स्वर्गमपवर्गं च गच्छताम्॥
महेन्द्रो मलय: सह्य: शुक्तिमानृक्षपर्वत:।
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तात्र कुलपर्वता:॥ - विष्णु पु. २/३/१-३

कृतमाला और ताम्रपर्णी नदियां मलय पर्वत से निकलती हैं-

कृतमाला ताम्रपर्णीप्रमुखा मलयोद्भवा:। -विष्णु पु. २/३/१३

इसी प्रकार अग्नि पुराण (११९/ १-८), मार्कण्डेय पुराण (५४/१०-११, ५४/२८), वराहपुराण (८५वें अध्याय), ब्रह्म पुराण (१९/१-३, १९/१३) कूर्मपुराण (४७/२३-२४, ४७/३७) भागवत पुराण (५/१९/१६) मत्स्य पुराण (११४/१७, ११४/३०), ब्रह्मवैवर्त पुराण(६/३-५) आदि पुराणों में भी मलय पर्वत का उल्लेख इसी प्रकार मिलता है। महाभारत के भीष्मपर्व के द्वितीय अध्याय में भी इन सातों कुल पर्वतों का नामोल्लेख है केवल ऋक्ष पर्वत के स्थान पर गन्धमादन पर्वत आया है।

मलय पर्वत से जो नदियां निकलती हैं इनका विवरण इस प्रकार है -

कृतमाला नदी – प्राय: सभी पुराणों में इस नदी का उद्गम स्थान मलय पर्वत बताया गया है। परन्तु वामन पुराण में इस नदी का उद्गम स्थान शुक्तिमान् पर्वत बताया गया है (वामन पु. १३/३२)। भागवत पुराण में कहा गया है कि मनु ने इस नदी के तट पर तप किया था और मत्स्य को अवतार रूप में प्रकट होने में सहायता की थी। वर्तमान में इसे वैगा नदी के नाम से जानते हैं जो मदुरा के पास मद्रास में है।

ताम्रपर्णी नदी – पुराणों में इसे मलय पर्वत से नि:सृत माना गया है।(विष्णु पुराण, वायु पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्मपुराण आदि) परन्तु वामन पुराण में इसका भी उद्गम स्थान शुक्तिमान् पर्वत को माना गया है। (१३/३२) अन्य कुछ स्थानों में इसे महेन्द्र पर्वत से नि:सृत माना गया है। कालिदास ने रघुवंश में कहा है कि जहां यह नदी समुद्र में गिरती है वहां बढिया मोती उत्पन्न होता है। यह भारत के अत्यन्त दक्षिणी भाग में बहने वाली नदी है। वर्तमान में यह ताम्रवारि नदी कहलाती है, जो मद्रास प्रान्त में चित्तर नदी से मिलती है।

उत्पलावती नदी - ब्रह्मपुराण, मत्स्य पुराण, वायुपुराण, कूर्मपुराण आदि में इसका उद्गम स्थान मलय को माना गया है। वामन पुराण में इसे भी शुक्तिमान पर्वत से नि:सृत बतलाया गया है।

मार्कण्डेय पुराण, वायु पुराण और मत्स्य पुराण में पुण्यजाति नदी को भी मलय पर्वत से नि:सृत माना गया है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि मलय पर्वत सात कुल पर्वतों में से एक पर्वत है। जो भारतवर्ष में विद्यमान हैं। परन्तु किसी भी पुराण में इस पर्वत की अवस्थिति का वर्णन नहीं प्राप्त होता है। पुराणों में इस पर्वत का नामोल्लेख कुल पर्वतों में किया गया है और इससे नि:सृत नदियों को बताया गया है। इससे यह स्पष्ट नहीं होता है कि इस पर्वत की अवस्थिति कहां है। परन्तु वर्तमान में सभी विद्वान् इस पर एक मत है कि इस पर्वत की अवस्थिति दक्षिण भारत में है। आचार्य बलदेव उपाध्याय ने कहा है कि "दक्षिण भारत का नीलगिरि पर्वत, जहां पूर्वी घाट तथा पश्चिमी घाट की पहाड़ियां एक दूसरे से मिलकर एक बंकिम रेखा के समान आकार धारण करती हैं। इस पर्वत पर चन्दन के वृक्ष बहुतायत से होते हैं और इसी कारण चन्दन मलयज के नाम से विख्यात है।" कावेरी नदी के दक्षिण में पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग मलयगिरि कहलाता है। इसे त्रावणकोण पहाड़ी भी कहते हैं। प्राचीन काल में यहां ऋषि अगस्त्य का आश्रम था, इसलिए यह अगस्त्यकूट पर्वत के नाम से भी प्रसिद्ध था।

सन्दर्भ ग्रंथ- सूची

1.विष्णुपुराण – (मूल पाठ हिन्दी – अनुवाद), अनुवादक: मुनिलाल गुप्त, गीता प्रेस, गोरखपुर, १९६५.

२.अग्निपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर

३.ब्रह्म पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर

४.वायु पुराणम्, आनन्दाश्रम मुद्रणालय, १९०५

५.भविष्य पुराण, वेंकटेश्वर प्रेस, बाम्बे, १९५०.

६.गरुड़ पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर

७.मत्स्य पुराण, तारिणीश झा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग १९८९.

८. भागवत पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर

९.वामन महापुराण, ओमनाथ बिमली, कन्हैयालाल जोशी, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, २००५.

१०. विष्णुपुराण तत्त्वदर्शन (संस्कृत – हिन्दी), किशोर विद्या निकेतन, वारणसी, १९८

११.पुराण विमर्श, बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी,१९७८.

१२.इतिहास पुराण का अनुशीलन, रमाशंकर भट्टाचार्य,वाराणसी, १९३३.

१३.पुराण परिशीलन, गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, १९७०.

१४.पुराण इतिहास विमर्श, प्रो. आर. आई. नानावती, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, १९७८.

१५.वामन पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन, श्रीमती मालती त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद, १९९३.